(भारतीय शिक्षण मंडल महाकौशल प्रांत द्वारा प्रस्तुत)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : स्पष्ट दिशा और नयी आशा

(नया भारत : नयी शिक्षा नीति)

Scanned with OKEN Scanner

ISBN : 978-81-89740-61-0

(भारतीय शिक्षण मंडल महाकौशल प्रांत द्वारा प्रस्तुत)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : स्पष्ट दिशा और नयी आशा

(नया भारत : नयी शिक्षा नीति)

संपादक
डॉ. सरोज गुप्ता

प्रकाशक
कृष्णा कम्प्यूटर, सागर

मुद्रक
स्वतंत्र कम्प्यूटर एण्ड प्रिंटर्स, इतवारी वार्ड, सागर
☎ : 07582-292228, 9981466528

Scanned with OKEN Scanner

11. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शिक्षकीय दायित्व
प्रो. सरोज गुप्ता 68

12. विमर्श : भविष्य की शिक्षा बुनियादी साक्षरता की समझ
प्रो.उषा शर्मा 89

13. विधि शिक्षा : चुनौतियाँ और भविष्य
प्रो. प्रदीप सिंह 93

14. देश निर्माण के भाव से करना होगा कार्य
श्याम नारायण मिश्र 98

15. नाट्यकला शिक्षा
जी.एस. रंजन 102

16. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका
प्रोफेसर रवीन्द्र नाथ तिवारी 105

17. शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में इच्छा शक्ति का अभाव
डॉ. चेतना उपाध्याय 109

18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
डॉ. उषा मिश्रा 113

19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: विद्यालय शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में
डॉ. अनूपी समैया 118

20. नई शिक्षा नीति 2020: एक परिपेक्ष्य
डॉ. श्रीमती प्रीति शर्मा 129

21. नई शिक्षा नीति 2020
श्रीमती पल्लवी सक्सेना 133

22. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
श्रीमती स्नेहलता जैन 136

23. राष्ट्रीय शिक्षा नीति और मातृभाषा
सुश्री ऊषा वर्मन 138

Scanned with OKEN Scanner

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: विद्यालय शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के संदर्भ में

डॉ. अनूपी समैया

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र.

भारतीय समाज में शिक्षा को हमेशा से ही मान्य स्थान दिया जाता रहा है। शिक्षा, सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त एवं विश्वसनीय माध्यम है। शिक्षा एवं समाज का अन्योन्याश्रित संबंध है। शिक्षा से समाज बदलता है साथ ही बदलते हुए समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा एवं उसके तंत्र में भी अपेक्षित बदलाव अपरिहार्य होते हैं। शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों को उजागर करती है, उसके देवत्व का दर्शन कराती है, मानवीय मूल्यों की अनुभूति का उसे अवसर प्रदान करती है और स्वानुभूति का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा द्वारा ऐसे वातावरण की सर्जना अभीष्ट है, जिससे व्यक्ति अपनी नैसर्गिक क्षमताओं का पूर्णतया विकास करने की ओर अग्रसर हो सके। विश्व में ही नहीं, स्वातन्त्रोत्तर भारत में भी मूल्य ह्रास तेजी से हो रहा है। परिणामतः राष्ट्रीय जीवन में प्रदूषण व्याप्त हो गया है। मूल्यों की यह संकटग्रस्त स्थिति जिस प्रकार जीवन के अन्य क्षेत्रों में व्याप्त है उसी प्रकार विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के छात्रों, शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों में व्याप्त है। विकास तथा शान्तिप्रिय जीवन के लिये यह स्थिति घातक है। आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा की प्रक्रिया का पुनः अभिविन्यास किया जाए और उसके माध्यम से ऐसे उदात्त मूल्यों की शिक्षा दी जाए जिससे शिक्षित युवक राष्ट्र की संपत्ति बन सकें। भारत में ऐसी शिक्षा–व्यवस्था की आवश्यकता है जो हमारी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ हमारी राष्ट्रीय अखण्डता एवं सांस्कृतिक एकता को सुरक्षित रख सके तथा शिक्षा–प्रशिक्षणरत देश का शिक्षित युवा–समाज वर्तमान एवं निकट भविष्य की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना कर सके और देश में रचनात्मक नव–परिवर्तन ला सके।

स्वतंत्रता के पश्चात्, भारत सरकार राष्ट्रीय प्रगति और सुरक्षा के प्रभावी साधन के रूप में शिक्षा पर अधिकाधिक ध्यान देती रही है। अनेक आयोगों और समितियों ने शैक्षिक पुनर्निर्माण की समस्याओं की समीक्षा की। आयोगों की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए कदम उठाए गए।